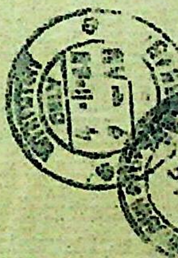
P.O. GITA PRESS (Gorakhpur) India.

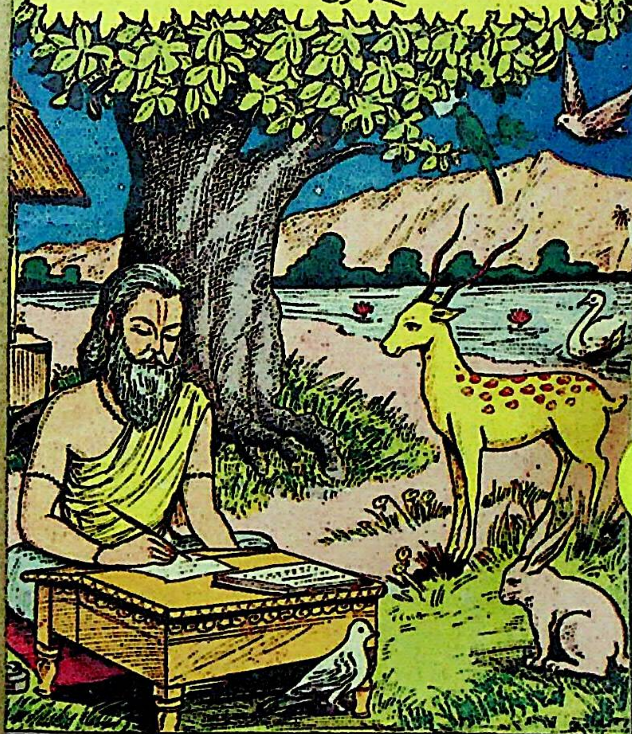
P. O. GITA PRESS (Gorakhpur) India.

☞ ग्राहक नं० __________

श्री 122. Sri Mumuksh-Bhawan,
Assighat, Kashi, Varanasi



तत्व बोध



...बुक डिपो, माता गली मथुरा

॥ श्री ॥

अथ तत्वबोध प्रारम्भः ।

टीकाकार—'पं० कैलाश चन्द्र सारस्वती'

मणिप्रभा टीका सहित

वासुदेवेन्द्र योगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम् ।
मुमुक्षूणां हितार्थाय तत्ववोधोऽविधीयते ॥

भाषा--ज्ञान दाता योगेन्द्र वासुदेवेन्द्र गुरुजी को प्रणाम करके संसार के वन्धन से मुक्ति होने की इच्छा करने वाले मुमुक्षु पुरुषों के लिये तत्व का ज्ञान कराने वाला तत्व बोध नाम का ग्रन्थ कहता हूँ।

साधन चतुष्टय संपन्नाधिकारणां मोक्ष—
साधन भूतं तत्व विवेक प्रकारं वक्ष्यामः ॥

भाषा—संसार में सब वस्तु भरी हैं। किन्तु जिसकी जिसको आकांक्षा है वही उस वस्तुका अधिकारी है। इस तत्व विवेक का चारों प्रकारका साधन जिनके पास है वही अधिकारी है। उन्हीं के लिये मोक्ष अर्थात् संसार का आवागमन रूप बन्धन से छुड़ाने का साधन भूत तत्वोंके विचार के प्रकारको तत्व विवेक प्रकारको वर्णन करताहूं।

भावार्थ—मुमुक्षु पुरुषों ने तत्वों का विचार कर संसार के आवागमन रूप बन्धन को तोड़कर मोक्ष प्राप्त किया है। अतः यह तत्व विवेक नामका ग्रन्थ मोक्षका साधक है। तत्वों के विचार से ही मोक्ष सध सकता है।

प्रश्न—साधक चतुष्टयं किम् ?
उत्तर—नित्यानित्य वस्तु विवेकः ॥ १ ॥
इहा मुत्रार्थफल भोग विरागः ॥ २ ॥
शमादि षट्क सम्पत्तिः ॥ ३ ॥
मुमुक्षुत्वं चेमि ॥ ४ ॥

भाषा प्रश्न--पहिले कहा गया है कि चारों प्रकार का साधन प्राप्त पुरुष ही इस ग्रन्थ का अधिकारी है। तब चारों साधन कौन कौन हैं।

उत्तर--पहिला साधन--नित्य एवं अनित्य चीजों का विचार होना।

दूसरा साधन--इस लोक तथा परलोक के फलों के भोगों में विराग होना।

तीसरा साधन--शम, दम, आदि छः प्रकार की सम्पत्तियों का होना।

चौथा साधन--मोक्ष अर्थात् संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाने की इच्छा होना।

नित्यानित्य वस्तु विवेकः कः ?
नित्यवस्त्वेकं ब्रह्मतद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यम्।
अयमेव नित्यानित्य वस्तु विवेकः ॥

भाषा-पहिला साधन बताया गया है कि नित्य एवं

अनित्य वस्तुओं का विचार। तब कहते हैं कि नित्य अनित्य वस्तुओं का विचार क्या है।

उत्तर-नित्य वस्तु एक ब्रह्म है। उसको छोड़कर अन्य सब अनित्य है। इसीको नित्यानित्य वस्तु विवेक कहते हैं

भावार्थ-संसारी जीव संसार के वस्तुओं को प्राप्त करने की लालसा से अपनी अमूल्य आयु को बिता देता है; और उसी अनित्य अर्थात् नश्वर वस्तु को प्राप्त कर सुख मानता। जब उस नश्वर वस्तु का नाश हो जाता है, तब वह दुखी हो जाता है। इस प्रकार क्षणिक दुख सुख का अनुभव करता हुआ घबड़ा कर अनित्य अर्थात् जो सदा न रहे। नित्य जो सदा रहे। इस बात का जो विचार करता है वही नित्यानित्य विवेक है; वही प्रथम साधन है। वह साधन जिसके पास हो वह पहला अधिकारी है। अनित्य वस्तुओं से अभ्यास के द्वारा चित्त हटाकर नित्य जो एकब्रह्म है उसमें अपने मनको लगाता है। जैसा कि एकमेवा द्वितीयं ब्रह्मनेह नानास्तिकिञ्चने-त्यादि श्रुतियों से कहा गया है।

विरागः कः ! इह स्वर्ग भोगेषु इच्छाराहित्यम्।

प्रश्न—विराग किसको कहते हैं ?

उत्तर—इस मृत्युलोक एवं स्वर्गलोक के भोगों में आकांक्षा न होना इसी को विराग कहते हैं।

शमादि साधन सम्पत्तिः का।

शमो,दमः,उपरतिस्तितिक्षाश्रद्धासमाधानंचेति

- भाषा--शमादि सम्पत्तियों का होना तीसरा साधन बतलाया गया है। प्रश्न है कि शमादि साधनों की सम्पत्तियां कौन कौन हैं ;

उत्तर--शम, दम, उपरति, तितिक्षा,श्रद्धा,समाधा यही छः संपत्तियाँ हैं। जो इनसे युक्तहो वह तीसरा साधक है

शमः कः ? मनो निग्रहः

भाषा-प्रश्न होता है कि शम क्या है।

उत्तर-विषय के पदार्थों से मनके रोकने को शम कहते हैं।

भावार्थ--मन की वृत्तियाँ जब तक विषय भोगने में तल्लीन रहेंगी जब तक तत्वोंका विचार नहीं हो सकता तब तो विषय भोगोंका विचार हो सकता है। इसलिए भोगों से मन को विमुख रखना ही शम है।

दमः कः ? चक्षुरादि बाह्येन्द्रिय निग्रहः।

भाषा--दम क्या है--आंख, कान आदि इन्द्रियों का रूप रस, गंध आदि विषयों से रोकने को दम कहते।

भावार्थ--जब तक बाहरी इन्द्रियों से विषय को न हटाया जाय तब तक आभ्यन्तरिक मन की वृत्तियां नहीं हटाई जा सकती हैं, विषयों से। इसी प्रकार बाहरी इन्द्रियों को कथमपि हटा कर भी जो मन से विषयों को विचारते हैं वे भी मिथ्या चरित्र है।

उपरतिः का ! स्वधर्मानुष्ठानमेव ।

प्रश्न—उपरति किसे कहते हैं। अपने धर्म के अनुष्ठान में मन लगाने को ।

तितिक्षा का?शीतोष्णसुख-दुःखादि सहिष्णुत्वम् ।

भाषा—तितिक्षा क्या है ? जाड़ा गर्मी एवं सुख दुःख इनका सहन करने को ही तितिक्षा है ।

भावार्थ—जब नित्य वस्तु ब्रह्म में मन लगा तो जाड़ा लगने लगा,बीमार होकर दुःखी होगये,कुछ पाकर सुखी होगये,बस वह भूल गया,मन हट गया,तब इनको सहन करते हुए मनको ब्रह्मानन्दसे हटने न दे,यह तितिक्षा है ।

श्रद्धा कीदृश?गुरूवेदान्तवाक्येषुविश्वासःश्रद्धा

भाषा—श्रद्धा क्या है ! गुरू वाक्य एवं वेदान्त वाक्य में विश्वास होना ।

समाधानं किं ? चित्तैकाग्रता ।

भाषा—समाधान क्या है ? अन्य विषयों से मन को हटा कर ब्रह्म में ही लगाने को एकाग्रता कहते हैं ।

मुमुक्षुत्वं किम् ? मोक्षो मे भूयादितीच्छा ।

भाषा—मुमुक्षुत्व क्या है ? संसार के आवागमन रूप बन्धनों से मुक्त होने की इच्छा को मुमुक्षुत्व कहते हैं ।

एतत्साधन चतुष्टयं ततस्तत्व विवेकस्याधिकारिणो भवन्ति ।

भाषा—पहले कहे हुए चारों साधनों को प्राप्त पुरुष ही तत्व विवेक का अधिकारी है।

तत्त्वविवेकः कः?आत्मा सत्यस्तदन्यत्सर्वं मिथ्येति

भाषा—तत्व विवेक क्या है ! आत्मा सत्य है उसके सिवाय जो कुछ है, वह सब मिथ्या है। इसी विचार को तत्व विवेक कहते हैं।

आत्मा कः?स्थूल सूक्ष्मकारण शरीराद्व्यतिरिक्तः पञ्चकोशातीतः सन् अवस्यात्रय साक्षी सच्चिदानन्द स्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स आत्मा ।

भाषा—आत्मा क्या है ! पहले कहा गया है कि आत्मा सत्य है।

उत्तर—स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर; इन शरीर से भिन्न अन्नमय कोश, मनोमय कोश; विज्ञानमय कोश आदि पञ्च कोशों से भिन्न, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन अवस्थाओं का साक्षी सत्चित् आनन्द स्वरूप आत्मा है। आत्मा इसी आकार में रहता है।

स्थूल शरीरं किम् ! पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुख दुःखादि भोगायतनं शरीरम् ।

अस्तिजायते वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यतीति षड्विकार वदेतत्स्थूलं शरीरम्।

भाषा—स्थूल शरीर क्या है !

उत्तर-पञ्चीकरण किये हुए पञ्च महाभूतों से बनाया हुआ कर्मों से उत्पन्न हुआ, सुखादि भोगों का भवन अर्थात् जीवात्मा सुखादि भोग के लिए ठहरने की जगह इसी को शरीर कहते हैं। उत्पन्न होता है, बढ़ता है, बदलता है, घटता नष्ट होता है, इस स्थूल शरीर में छः विकार होते हैं।

सूक्ष्म शरीरं किम् ! अपञ्चीकृत पञ्चमहाभूतैः कृत सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादि भोगसाधनं पंचज्ञानेन्द्रियाणि, पंचकर्मेन्द्रियाणि, पंचप्राणादयः- मनश्चैकं बुद्धिश्चैका एवं सप्तदश कलाभिः यस्तिष्ठति तत्सूक्ष्म शरीरम्।

भाषा—सूक्ष्म शरीर क्या है। बिना पञ्चीकरण किए हुए पञ्च महाभूतों से निर्मित, श्रेष्ठ कर्मों से उत्पन्न हुआ, सुख दुःखादिकों को भोगने का साधन पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय पांच प्राणादि वायु एक मन एक बुद्धि इन सत्रह कलाओं से युक्त सूक्ष्म शरीर है।

श्रोत्रं त्वक्चक्षु रसना घ्राणमिति पंचज्ञानेन्द्रियाणि। श्रोत्रस्य दिग्देवता, त्वचो वायुः चक्षुष

सूर्य,रसनाया वरुणः प्राणस्याश्विनाविति, ज्ञानेन्द्रिय देवताः । श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम्, त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम्, चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्,रसनाया विषयो रसग्रहणम्,घ्राणस्य विषयो गन्धग्रहणमिति ।

भाषा-१ कान, २ त्वचा, ३ आंख, ४ जीभ, ५ नासिका येपांच ज्ञानेन्द्रियां हैं,अब ज्ञानेन्द्रियोंके देवताओंको कहते हैं, अर्थात् कान के देवता दिशाएँ हैं,त्वचाका वायु,आँख का सूर्य, जिह्वाका वरुण एवं नासिका का अश्विनीकुमार हैं, अब जो इन्द्रियां जिन विषयों को प्राप्त करती हैं उन विषयों को कहते हैं । जैसे कर्ण शब्द को ग्रहण करता है कान का विषय शब्द को ग्रहण करता है त्वचा का स्पर्श नेत्रका रूप,जिह्वाका रस नासिकाका गंध ग्रहण करताहै ।

ज्ञानेन्द्रिय, देवता, विषयबोधक चक्रमिदम् ।

इन्द्रिय	देवता	विषय
श्रोत्रस्य	दिग्देवता	शब्द ग्रहणम्
त्वचो	वायुः	स्पर्श ग्रहणम्
चक्षुषः	सूर्य	रूप ग्रहणम्
रसनायाः	वरुणः	रस ग्रहणम्
घ्राणस्य	अश्विनौ	गन्ध ग्रहणम्

वाक्,पाणि,पाद,पायू, पस्थानिति पंचकर्मेन्द्रि-

याणि।त्वचो देवता वह्निः।हस्तयोरिन्द्रः,पादयो-र्विष्णुः,पायोर्मृत्युःउपस्थस्य प्रजापतिरिति कर्मेन्द्रियदेवताः,वाचो विषयो भाषणम्।पाण्योर्विषयो वस्तुग्रहणम्। पादयोर्विषयोगमनम्।।पायोविषयो मलत्यागः उपस्थस्त विषय आनन्द इति ।

भाषा—१ वाणी, २ हाथ, ३ पांव, ४ गुदा, ५ लिङ्ग इन्हीं ५ को कर्मेन्द्रिय बोलते हैं । इनके देवता इस प्रकार हैं । वाणी के देवता अग्नि, हाथों के इन्द्र, पांवों के विष्णु, गुदा के मृत्यु, लिङ्ग के प्रजापति हैं । अब इनका विषय बयान करते हैं । वाणी का विषय भाषण बोलना है, हाथों का चीजों का लेना, पावों का चलना, गुदा का मल त्याग, लिङ्ग का आनन्द है ।

कर्मेन्द्रिय, देवता, विषयबोधक चक्रम् ।

इंद्रिय	देवता	विषय
वाणी	अग्नि	भाषण
हाथों का	इंद्र	वस्तुओं का लेना
पावों का	विष्णु	चलना फिरना
गुदा का	मृत्यु	मल त्याग
लिङ्ग का	प्रजापति	आनन्द है

कारण शरीर किम्?अनिर्वाच्यानाद्य विद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारणमात्रंमत स्वस्वरूपज्ञानं निर्विकल्पकरूपं यदस्ति तत्कारण शरीरम् ।

भाषा—कारण शरीर क्या है ? अनिर्वाच्य व्यष्टि अर्थात् अविद्या में जो चेतन का प्रतिबिम्ब है उसी को जीव बोलते हैं। व्यष्टि अविद्या में जो चेतन का प्रतिबिम्ब है इस समूह का नाम ही कारण शरीर है ।

अवस्थात्रयं किम् ? जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यवस्थाः।

भाषा-३ अवस्थायें हैं, १ जाग्रत, २ स्वप्न, ३ सुषुप्त्यवस्था ।

जाग्रदवस्था का? श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियैः शब्दादिविषयैश्च ज्ञायते इति यत्सा जाग्रदवस्था । स्थूल शरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते।

भाषा--जाग्रत अवस्था क्या है ? ज्ञानेन्द्रिय एवं उनके विषयों से जिनका ज्ञान होता है वही जाग्रत अवस्था है ।

भावार्थ—जिस प्रकार कान से शब्द का ज्ञान जाग्रत अवस्था में ही होता है आंख किसी वस्तु को जाग्रत अवस्था में ही देखती हैं । इसी प्रकार नाक से गंध जिह्वा से रस त्वचा से स्पर्श का ज्ञान जाग्रत ही में होता है । स्थूल शरीर का अभिमानी जो आत्मा है उसे विश्व कहते हैं ।

स्वप्नावस्था केतिचेत्! जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं तज्जनितवासनया निद्रा समये यः प्रपञ्चः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा तैजस इत्युच्यते ।

भाषा—जाग्रत अवस्था में जो देखा-सुना है उसके देखने सुनने से जो वासना पैदा हो निद्रावस्था में उसी वासना से जो प्रपञ्च अनुभव होता है वही स्वप्नावस्था है सूक्ष्म शरीराभिमानी आत्मा तैजस कहा जाता है ।

अतः सुषुप्त्यवस्था का ? अहङ्किमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयते इति सुषुप्त्यवस्था। कारण शरीराभिमानी आत्माप्राज्ञ इत्युच्यते।

भाषा-सुषुप्ति अवस्था क्या है ? मैं कुछ नहीं समझता सुख से मैंने निद्रा का अनुभव किया, इस प्रकार का ज्ञान जब भी हो उसी को सुषुप्ति अवस्था कहते हैं। कारण शरीराभिमानी आत्मा को प्राज्ञ कहते हैं।

पंचकोशाः के ! अन्नमयः प्राणमयो मनोमयो विज्ञानमय आनन्दमयश्चेति ।

भाषा-पञ्चकोश क्या है ? अन्नमय, प्राणमय; मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय ये पांच कोश हैं।

अन्नमयः कः ! अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य अन्नरूप पृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः स्थूल शरीरम् ।

भाषा-अन्न रस से ही उत्पन्न होकर एवं अन्न रस से ही बढ़कर जो अन्न रूप पृथ्वी में लीन होता है उस स्थूल शरीर को अन्नमय कोश कहते हैं।

प्राणमयः कः ? प्राणादि पञ्चवायवः वागादिन्द्रिय पञ्चकं प्राणमय।

भाषा-प्राणमय कोश क्या है ? प्राण, पंच-वायु, वाणी पंच कर्मेन्द्रियां इत्यादि को प्राणमय कोश कहते हैं।

मनोमयः कोशः कः ? मनश्च ज्ञानेन्द्रिय पञ्चकं मिलित्वा भवति समनोमयः कोशः।

भाषा—मनोमय कोश क्या है ? एक मन पांच ज्ञानेन्द्रियां का मिश्रा मनोमय कोश होता है।

विज्ञानमयः कः ? बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रिय पंचकं-मिलित्वा यो भवति स विज्ञानमयः कोशः।

भाषा—बुद्धि एवं पांच ज्ञानेन्द्रियाँ मिलकर विज्ञानमय कोश होता है।

आनन्दमयः कः ? एवमेव कारण शरीर भूता विद्यास्थमलिन सत्वं प्रियादि वृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः।

भाषा-आनंद मय कोश क्या है ? इसी कारण शरीर भूत अविद्या में मलिन रजोगुण-तमोगुण से दबा हुआ सत्व-गुण प्रियादि वृत्तियों सहित आनंदमय कोश है।

एतत्कोश पंचकं मदीयं शरीरं मदीया प्राणः मदीयं मनश्च मदीया बुद्धिर्मदयं ज्ञानंमिति स्वे-

नैवज्ञायते। तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं कटक, कुण्डल,गृहादिकं स्वस्माद्भिन्नं तथा पंचकोशादिकं मदीयत्वेन ज्ञातमात्मा न भवति।

भाषा—ये पाँचों कोश; एवं यह मेरा शरीर ये मेरे प्राण, मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान ये सब अपने ही से जाने जाते हैं। परन्तु अपने से भिन्न हैं। जैसे अपना कटक, अपना कुण्डल, अपना घर है, ये सब अपने से भिन्न हैं इसी प्रकार अपने से जाने हुए पंचकोश इत्यादि अपनेसे भिन्न हैं,आत्मा नहीं हैं, यानी पंचकोश तो माया रचित है और आत्मा माया से भिन्न केवल द्रष्टा है।

आत्मा तर्हि कः ? सच्चिदानंद स्वरूपः।

भाषा-तब आत्मा क्या है ! सत् चित् आनंद स्वरूप है।

सत्किम् ! कालत्रयेऽपि तिष्ठतीतिसत्।

भाषा-सत् किसे कहते हैं ! तीनों कालोंमें समान भाव रहे अर्थात् घटे-बढ़े न उसे सत् कहते हैं।

चित् किम् ! आनंद स्वरूपः।

भाषा-चित् किसे कहते हैं ! आनन्द स्वरूप समस्त पदार्थों को जगाने वाला उसे चित् कहते हैं।

आनंदः कः ! सुख स्वरूपः।

भाषा-आनन्द क्या है ? जिसमें सुख स्वरूप दुख की मात्रा न हो।

एवं सच्चिदानंद स्वरूपं स्वात्मानं विजानीयात्।

भाषा-ऐसा सच्चिदानंदस्वरूप अपने आत्मा को पहिचाने।

अथ चतुर्विंशति तत्वोत्पत्तिं प्रकारं वक्ष्यामः।

भाषा-इसके बाद २४ तत्वों की उत्पत्ति का प्रकार कहते हैं।

ब्रह्माश्रया सत्व रजस्तमो गुणात्मिका माया अस्ति तत आकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः वायोस्तेजः, तेजसआपः, अद्भ्यः पृथ्वी।

भाषा-ब्रह्मके अवलम्बित जो सत्वगुण तमोगुणात्मिका माया है, उससे प्रथम आकाशकी उत्पत्ति। आकाश से वायु वायुसे तेज, तेजसे जल, जलसे पृथ्वी की उत्पत्ति हुई।

एतेषां पंचतत्वानां मध्ये आकाशस्य सात्विकांशात्श्रोत्रेन्द्रियं संभूतम्। अग्नेः सात्विकांशाच्चक्षुरिन्द्रियंसंभूतम्। वायोःसात्विकांशात्त्वगिन्द्रियं संभूतम्। जलस्य सात्विकांशाद्रसेन्द्रियं सभूतम्। पृथिव्याः सात्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं संभूतम्। एतेषां पंचतत्वानां समिष्टि सात्त्वकांशान्मनो बुद्धयहङ्कार चित्तान्तःकरणानि संभूतानि।

भाषा-इन ५ तत्वों में से आकाश तत्व के सात्विक अंश से कर्ण (कान) हुआ अग्नि तत्व के सात्विक अंश से नेत्र हुआ। वायु तत्व के सात्विक अंशसे स्पर्शेन्द्रिय हुआ; जल के सात्विकांश से जिह्वा इन्द्रिय हुआ, पृथ्वी के सात्विकांश से नाक हुई। इन ५ तत्वोंके मिश्र सात्विकांश से मन, बुद्धि अहङ्कार व चित्त ये चार प्रकार के अन्तःकरण बने हैं।

सङ्कल्प विकल्पात्मकं मनः, निश्चयात्मिका बुद्धिः, अहङ्कर्ता अहङ्कारः, चिन्तनकर्तृ चित्तम्। मनसो देवता चन्द्रमाः बुद्धेर्ब्रह्मा, अहङ्कारस्य रुद्र, चित्तस्य वासुदेव।

भाषा-सङ्कल्प विकल्पात्मक स्वरूप मन है। अर्थात जहाँ सङ्कल्प विकल्प को ही मन बताया है।

भावार्थ-यह मन पञ्च त के समष्टि सात्विकांश से पैदा होने वाले अन्तःकरणों में पहिला है। इसका रूप नहीं होता केवल लक्षण से पहिचाना जाता है। अर्थात् हम गङ्गा स्नान करें कि नहीं; यही सोचने वाला मन है, और निर्णय करने वाली बुद्धि दूसरी है, यह दिन ही है, रात नहीं, यह निर्णय करने वाली बुद्धि है। मैं चलता हूँ, खाता हूँ, पीता हूं, यह सोचनाही अहङ्कार है। किसी वस्तु का चिंतन कर्त्ता चित्त है, मनका देवता चन्द्रमा, बुद्धिका ब्रह्म, अहङ्कार का रुद्र और चित्त का वासुदेव है। इसी तरहसे ५ ज्ञानेन्द्रियां तथा मन, बुद्धि अहङ्कार एवं चित्त आकाशादि ५ तत्वों के सात्विक अंश से बने हैं।

एतेषां पंचतत्वानां मध्ये आकाशस्य राजसांशात् वागिन्द्रियं सम्भूतम् । राजसांशात् पाणीन्द्रियं संभूतम्।वह्ने राजसांशात् पादेन्द्रियं संभूतम् जलस्य राजसांशात् उपस्थेन्द्रियम्पृथिव्या राजसांशात् गुदेंद्रियं संभूतम् । एतेषां समष्ठिं राजसांशात् पंच प्राणाः संभूताः ।

भाषा—इन पांच तत्वों में आकाश तत्व को राजस अंश से वाणिन्द्रिय हुई है, वायु तत्व के राजस अंशसे हस्तेन्द्रिय हुआ है, तेज के राजस अंश से चरणेन्द्रिय, एवं जल के राजस अंश से उपस्थ (लिङ्ग) पृथ्वी के राजस अंश से गुदा और पांचों तत्वों के राजस अंशसे पांच कर्मेन्द्रिय एवं पांच प्राण यह दश पदार्थ हुए हैं ।

एतेषां पंचतत्वानां तामसांशात् पंचकृत पंचतत्वानि भवन्ति । पंची करणं कथमिति चेत् एतेषां पंच महाभूतानां तामसांश स्वरूप मेकैकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकमर्धं पृथक् तुष्णीं व्यवस्थाप्या परमर्धं चतुर्धाविभज्य स्वार्ध मन्येष्वर्धेषु स्वभाव चतुष्टयं संयोजनं कार्यं तदा पंचीकरणं भवति । एतेभ्यः पंचीकृत

पञ्चमहा भूतेभ्यःस्थूल शरीरं भवति। एवं पिंड ब्रह्माण्यो रैक्यं सम्भूतम्।

भाषा--इन पांच तत्वों के तामस अंश मे पंचीकरण हुए पांच तत्व पैदा होते हैं। पञ्चीकरण कैसे ? पृथ्वी के जल के, तेज के, वायु के, आकाश के इन पांचों तत्वों के तमोगुण अंश को दो स्थानों में बांट करके आधे आधे भाग को चार भागों में बाँट कर एक एक भाग को बाकी तत्वों के आधे भाग में चुप होकर मिला दे तब पञ्चीकरण होता है। पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतों से स्थूल शरीर होता है : इस प्रकार पिण्ड और ब्रह्माण्ड की समानता हुई। जिस प्रकार पञ्चमहाभूतों से पिण्ड होता है वैसे ही ब्रह्माण्ड भी पिंड ब्रह्मांड मे भेद नहीं है।

स्थूल शरीराभिमानी जीवनामकं ब्रह्म प्रतिविम्ब भवति स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मादीश्वर भिन्नत्वेन जानाति अविद्योपाधिः सन् आत्मा जीव इत्युच्यते।

भा-ब्रह्म का प्रतिविम्ब ही स्थूल शरीर का अभिमान करीब जीव कहाता है। वही जीव प्रकृति अर्थात् माया से ईश्वर को अपने से पृथक समझता है। अविद्या की उपाधि वाला आत्मा जीव कहाता है।

मायोपाधिःसन् ईश्वर इत्युच्यते। एवमुपाधि भेदाज्जीवेश्वर भेद दृष्टिर्यावत्पर्यंतं तिष्ठति तावत्पर्यंतं जन्म मरणादिरूप संसारो न निवर्तते। तस्मात् कारणात्न जीवेशयरयोर्भेद बुद्धिःकार्या।

भाषा-समष्टि अविद्या में चेतन का जो स्वरूप है उसीको ईश्वर कहते हैं, इसी भांति उपाधि भेद से जीव भिन्न है, एवं ईश्वर भिन्न है ऐसी भेद बुद्धि जब तक रहती है तब तक जन्म मरणादि रूप संसार नहीं छूटता, इसी से जीव एवं ईश्वर एक ही है; इस प्रकार अपनी बुद्धि को रखनी चाहिए, भेद को दूर करना चाहिए।

ननु साहंकारस्य किंचिज्ज्ञस्य जीवस्या निरहंकारस्य सर्वज्ञस्येश्वरस्य तत्त्वमसीति महावाक्यात्कथःमभेदबुद्धिःस्यादुभयोर्विरुद्धधर्माक्रांतत्वात्।

अब पहले जो कहा है कि जीव एवं ईश्वर में अभेद बुद्धि होनी चाहिए यहाँ सन्देह करते हैं कि जीव अल्पज्ञ एवं अभिमान है, ईश्वर सर्वज्ञ व अहङ्कार रहित है। फिर "तत्त्वमसि" यह वाक्य भी अभेद बुद्धि ही के लिए कहती है। "परं च" अभेद बुद्धि कैसे, क्योंकि दोनों बुद्धि धर्म वाली हैं! अर्थात् जीव अल्पज्ञ अहङ्कारी ईश्वर सर्वज्ञ अहङ्कार रहित, फिर इनका अभेद कैसा।

इति चेन्न स्थूल, सूक्ष्म, शरीराभिमानी त्वम्पद वाच्योर्थ मुपाधि विनिर्मुक्तं समाधि दशासम्पन्नं शुद्धं चैतन्यं त्वम्पदलक्ष्यार्थः।

इस प्रकार का शङ्का नहीं, क्योंकि "तत्त्वमसि" इस श्रुति ने जीव एवं ईश्वर में भी एकता मानी है। जिस प्रकार तत्वमसि इस महा वाक्य में तत्-त्वम्-असि यह तीन पद हैं, यानी तत् अर्थात् वह त्वम् तूँ असि हैं वह ईश्वर तूँ है सारांश यह है कि तत्पदके दो अर्थ हैं वाच्य और लक्ष्य त्वं पदके भी अर्थ हैं; इस प्रकार तत्वं मसि इस महा वाक्य में तत् और त्वं पद का वाच्य अर्थ माया अविद्या से सम्बन्धित है, लक्ष्य अर्थ माया अविद्या के संबन्ध से रहित शुद्ध चैतन्य ब्रह्म है इसी कारण स्थूल सूक्ष्म शरीराभिमानी त्वंपद का वाच्य अर्थ है। उपाधि रहित समाधि दशाको पहुँचा शुद्ध चैतन्य ऐसा त्वंपद का लक्ष्य अर्थ है।

एवं सर्वज्ञत्वादि विशिष्ट ईश्वरस्तत्पद वाच्यार्थः उपाधिशून्यं शुद्ध चैतन्यं तत्पदलक्ष्यार्थः।एवंच जीवेश्वरयोश्चैतन्यरूपेणाऽभेदेबाधका भावः

भाष-इस प्रकार सर्वज्ञ व इत्यादि विशेषण युक्त जो ईश्वर है

वह तत्पद का वाच्य अर्थ है। उपाधि शून्य शुद्ध चैतन्य तत्पद का लक्ष्य अर्थ है। इस प्रकार जीव ईश्वर का चैतन्य रूप से अभेद होने में कोई बाधा नहीं है।

एवंच वेदान्तवाक्यैः सद्गुरूपदेशेन सर्वेष्वपि भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्नात जीवमुक्ता इत्यर्थ

भाषा--इस प्रकार वेदान्त वाक्यों से श्रेष्ठ गुरूके उपदेश से समस्त प्राणियों में जिनकी ब्रह्म बुद्धि है वे ही जीवनमुक्त हैं।

ननु जीवन्मुक्तः! यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहंशूद्रोऽहमस्मिइति दृढ़निश्चयस्तथा नाहं ब्राह्मणो न शूद्रो न पुरुषः किन्त्वसङ्गः सच्चिदानन्द स्वरूपः स्वप्रकाशः सर्वान्तर्यामी चिदाकाश रूपोऽस्मिइति दृढ़निश्चय रूपापरोक्ष ज्ञानवान जीवनमुक्तः।

भाषा--जीवन्मुक्त कौन है? मैं देह स्वरूप हूं, मैं पुरुष हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं शूद्र हूँ; इस प्रकार दृढ़ सकल्प है। एवंन मैं ब्राह्मण हूं न शूद्र हूं न पुरुष हूं बल्कि असङ्ग देहादि प्रपञ्च समूह से भिन्न हूं सच्चिदानंद स्वरूप हूँ स्वप्रकाश

हैं, सर्वअन्तरयामी हूं,चिदाकाश रूप हूं। ऐसा दृढ़ निश्चय रूप अपरोक्ष ज्ञान वाला पुरुष जीवन्मुक्त

ब्रह्मैवाहमस्मि इत्यपरोक्ष ज्ञानेन निखिल कर्मबन्ध विनिर्मुक्तः स्यात्।

भाषा-मैं ब्रह्म ही हूँ इस अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा मनुष्य समस्त कर्मबन्धनों से छूट जाता है।

कर्माणि कति विधानि सन्ति इति चेत् आगामि संचित प्रारब्धभेदेन त्रिविधानि सन्ति।

भाषा-कर्म कितने प्रकार के हैं। आगामी संचित प्रारब्ध। इन भेदों के तीन प्रकार हैं।

आगामि कर्म किम्? ज्ञानोत्पत्यनंतरं ज्ञानि देहकृतं पुण्य पाप रूपं कर्मदस्ति तदा गामीत्यभिधीयते।

भाषा-आगामी कर्म क्या है! ज्ञान की उत्पत्ति होने के पहले ज्ञानी के शरीर से किया हुआ जो पुण्य पाप रूप कर्म है वह आगामी कर्म कहा जाता है।

संचितं कर्म किम्? अनन्त कोटि जन्मानां

बीजभूतं सत् यत्कर्म जातं पूर्वार्जितं तिष्ठति तत्संञ्चितं ज्ञेयम् ।

भाषा-संचित कर्म किसको कहते हैं। पहले अनेक करोड़ जन्मों का बीज रूप जो कर्मों का समूह पहले का किया हुआ है वही संचित कर्म है ।

प्रारब्धकर्मकिमितिचेत्। इदंशरीर मुत्पाद्य लोके एवं सुख दुःखादि प्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगे नष्ट भवति प्रारब्ध कर्मणां भोगादेव क्षय इति ।

भाषा-प्रारब्ध कर्म क्या है ? इस शरीर को उत्पन्न करके संसार में सुख दुःखादि का दाता जो कर्म है उसे प्रारब्ध कर्म बोलते हैं। यह प्रारब्ध कर्म भोगने ही से नाश को प्राप्त होता है क्योंकि प्रारब्ध कर्म का भोग के ही अन्त होता है ।

संचित कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चयात्मक ज्ञानेन नश्यति । आगामि कर्माऽहि ज्ञानेन नश्यति । किंच आगामि कर्मणां नलिनीदल गतजल वज्ज्ञानिनां सम्बन्धो नास्ति ।

भाषा-सञ्चित कर्म "मैं ब्रह्म ही हूं" इस निश्चयात्मक

ज्ञान से नष्ट हो जाता है। आगामी कर्म भी ज्ञान से नष्ट होता है। क्योंकि आगामी कर्मों का कमल के पत्र का जल के साथ जैसे संबन्ध नहीं होता उसी भाँति ज्ञानियों से संबन्ध नहीं होते हैं।

किञ्च ये ज्ञानिनं स्तुवन्ति, भजंति, अर्चयंति, तान्प्रतिज्ञानि कृतमागामि पुण्यं गच्छति ये ज्ञानिनं निंदंति, द्विषंति, दुःख प्रदानं कुर्वंतितान् प्रतिज्ञानि कृतं सर्वमागामि क्रियमाणं यदावाच्यं कर्मपापात्मकं तद्गच्छति

भाषा-और जो ज्ञानियों की प्रशंसा, सेवा, पूजा करते हैं, वे उनका आगामी पुण्य प्राप्त करते हैं और जो उनकी निन्दा करता है उनको ज्ञानियों का आगामी किया हुआ संपूर्ण पापात्मक कर्म मिलता है।

तथा चात्मवित्संसारं तीर्त्वा ब्रह्मानंदमिहैव प्राप्नोति "तरति शोकमात्मवित्" इति श्रुतिः।

भाषा-आत्मज्ञानी पुरुष संसार से पार होकर इस जन्म में ब्रह्मानन्द को प्राप्त होता है। यह बात श्रुति में भी स्पष्ट है कि "आत्मज्ञानी शोक को पार कर जाता है।

तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ज्ञान सम्प्राप्ति समये मुक्तोऽसौ विगताशयः इति स्मृतेश्च ।

भाषा—ज्ञानी पुरुष काशी में शरीर त्याग करे या चाण्डाल के घर में वह तो ज्ञान प्राप्ति के ही समय में मुक्त हो जाता है ।

❀ इति ❀

मिलने का पता—
विशन बुक-डिपो माता गली मथुरा ।

मु०—ठा० घीरीसिंह रघुवंशी (श्री राम प्रेस) माता-गली मथुरा

❀ जीवनोपयोगी नवीन तथा सुन्दर पुस्तकें ❀

बड़ा फिल्मी मं. बहार	२)	फिल्मीगायनबड़ा	१॥)	फिल्मी गायन	॥)
लता के गाने	॥)	नरगिस के गाने	॥)	सुरैया के गाने	॥)
मुकेश के गाने	॥)	तलत के गाने	॥)	आल्हखंडबड़ारंगं.	१०)
आल्हा खन्ड	५)	दृष्टान्तमहासागर	२॥)	दृष्टान्त सागर	२॥)
उपनिषद् प्रकाश	३॥)	गीतांजली	३)	मुर्गीपालन	२)
मछली पालन	२॥)	भृतहरी शतक	१)	चाणक्य नीति	।॥)
शिव स्वरोदय	।॥)	एकादशीमहात्मभा०	१)	न्याय दर्शन	३)
सूरसागर	८)	भजन संग्रह	२)	गोपीचन्द बाल क०	३॥)
पूरनमल बालक०	३)	ढोलामारू	६)	लग्न चन्द्रिका	२)
वृज विहार	४॥)	वृज विलास	८)	वशिष्ठ हवन पद्धति	१)
विवाह पद्धति	१)	मोहन मोहनी	१॥)	प्रेत मंजरी	१)
मनोहर लीला	१)	विचार सागर पं०	१०)	विचारचन्द्रोदयपी०	३)
स्त्रोत रत्नाकर	२)	भक्त विरदावली	३॥)	भक्त माल	४)
रुक्मिणीमंगल व०	४॥)	वाल्मीक चित्रावली	॥)	रैदास रामायण	२)
राम०भा०टी०तु०कृ०	१०)	रामा०गु०भा०टी०	५)	रामा० गु० मूल	१॥)
राम०भा०टी० व०	३५)	वाल्मी.रामा.भा.टी.	२०)	वाल्मी०रामा०भा०	१०)
सुखसागर बड़ा	१५)	सुखसागर	१०)	सुखसागर छो०	५)
दुर्गासप्तशतीभा०टी०	२)	दुर्गा भाषा	१॥)	शिव पुराण भाषा	१२)
कार्तिक महात्म भाषा	१)	योगवशिष्ठ	३)	विश्राम सागर	८)
विदुर नीति	१)	महाभारत भाषा	८)	गीता भाषा बड़ी	२)
गीता भाषा	१॥)	मनुस्मृति	५)	प्रेम सागर	३॥)
रामा० तर्ज राधे०	३॥)	गजाभोजकालीदमन	२॥)	महा०कीअमरवाणियां	१॥)
स्वास्थ्य शिक्षा बड़ी	४)	स्वास्थ्य विज्ञान	५)	स्वास्थ्य शिक्षा	६)
कुरान शरीफहिन्दी	८)	मल्ल युद्ध	१)	वर्ष प्रबोध	३॥
शिवलीला मृत	१॥)	कथा पचीसी	।॥)	ब्रह्मचर्य	१)
आल्हा रामा०	२)	टार्जन और न्यूमा	१)	टार्जनऔरनमकहराल	१)
टार्जन का साथी टैंटर	१)	टार्जनकीपातालविजय	१)	टार्जन का बेटा	१)
टार्जनऔरकिंगकौंग	१)	अजगरदेशमेंटार्जन	१)	शेरों केझुन्डमेंटार्जन	
टार्जनकाहवाईकिला	१)	टार्जन के कारनामे	१)	हरिश्चन्द्र नाटक	

पता—विश्राम पु० डिपो [illegible] गली, मथुरा।